The Research Dialogue
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-3, October-2023
www.theresearchdialogue.com

नासिरा शर्मा के साहित्य में सामाजिक सरोकार और स्त्री विमर्श

डॉ० जुनैद अन्दलीब साजिद
असिस्टेंट प्रोफेसर
श्री बाबू सिंह दद्दू जी कृषि महाविद्यालय, फर्रुखाबाद

सारांश
यह शोध पत्र समकालीन हिंदी साहित्य की प्रमुख कथाकार नासिरा शर्मा के साहित्यिक योगदान, रचनात्मक दृष्टि और सामाजिक सरोकारों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। नासिरा शर्मा का साहित्य स्त्री विमर्श, सांप्रदायिक सद्भाव, सामाजिक यथार्थ और मानवीय संवेदनाओं का प्रतिनिधित्व करता है। इस शोध में उनके उपन्यासों, कहानियों और यात्रा वृत्तांतों का गहन अध्ययन किया गया है। विशेष रूप से उनकी प्रमुख कृतियों जैसे 'शाल्मली', 'ठीकरे की मंगनी', 'जिंदा मुहावरे', 'बुतखाना', 'अक्षयवट' और 'संगसार' का साहित्यिक मूल्यांकन किया गया है। शोध पत्र में नासिरा शर्मा की कथा भाषा, शिल्प-विधान, पात्र-चित्रण और कथा-संरचना का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। उनके साहित्य में मुस्लिम समाज की स्त्रियों की स्थिति, धार्मिक कट्टरता, सामाजिक रूढ़ियाँ और आधुनिकता के संघर्ष का यथार्थ चित्रण मिलता है। यह शोध दर्शाता है कि नासिरा शर्मा ने भारतीय-अरबी संस्कृति के बीच सेतु का कार्य किया है और उनका साहित्य सांप्रदायिक सौहार्द्र और मानवीय मूल्यों का पक्षधर है।

मुख्य शब्द: नासिरा शर्मा, समकालीन हिंदी साहित्य, स्त्री विमर्श, मुस्लिम समाज, यथार्थवाद, सांस्कृतिक संवाद

1. प्रस्तावना

1.1 पृष्ठभूमि और महत्व

समकालीन हिंदी साहित्य में नासिरा शर्मा का नाम एक विशिष्ट स्थान रखता है। उनका जन्म 19 अगस्त 1948 को इलाहाबाद (अब प्रयागराज), उत्तर प्रदेश में हुआ था। नासिरा शर्मा केवल एक सशक्त लेखिका ही नहीं, बल्कि भारतीय और अरबी संस्कृति के बीच सांस्कृतिक सेतु भी हैं। उन्होंने अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. की डिग्री प्राप्त की और बाद में फ़ारसी भाषा का गहन अध्ययन किया। उनका साहित्यिक सफर छह दशकों से अधिक समय तक फैला हुआ है, जिसमें उन्होंने विभिन्न विधाओं में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

नासिरा शर्मा की रचनाएँ मुस्लिम समाज के भीतरी जीवन, स्त्री संघर्ष, धार्मिक कट्टरता और सामाजिक परिवर्तन का प्रामाणिक दस्तावेज हैं। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से उन मुद्दों को उठाया है जो सामान्यतः हिंदी साहित्य में अनदेखे रह जाते हैं। मुस्लिम समाज की स्त्रियों की पीड़ा, उनकी आकांक्षाएँ, संघर्ष और विद्रोह उनके साहित्य का केंद्रीय विषय है। वे समाज की उन परतों को खोलती हैं जहाँ रूढ़ियाँ और आधुनिकता का संघर्ष चलता रहता है।

1.2 शोध उद्देश्य

इस शोध पत्र के मुख्य उद्देश्य हैं: (1) नासिरा शर्मा के साहित्यिक योगदान का समग्र मूल्यांकन;

(2) उनके प्रमुख उपन्यासों और कहानियों का विश्लेषण;

(3) उनके साहित्य में स्त्री विमर्श और सामाजिक सरोकारों का अध्ययन;

(4) भारतीय-अरबी सांस्कृतिक संवाद में उनकी भूमिका का परीक्षण; और

(5) समकालीन हिंदी साहित्य में उनके स्थान का निर्धारण।

2. शोध प्रणाली

यह शोध पत्र विवरणात्मक और विश्लेषणात्मक शोध प्रणाली पर आधारित है। शोध के लिए प्राथमिक स्रोत के रूप में नासिरा शर्मा की मूल रचनाओं का अध्ययन किया गया है। द्वितीयक स्रोतों में समीक्षा ग्रंथ, शोध पत्र, साक्षात्कार और साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों को शामिल किया गया है। पाठ विश्लेषण, तुलनात्मक अध्ययन और सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में साहित्यिक मूल्यांकन की पद्धति अपनाई गई है। विशेष रूप से स्त्रीवादी आलोचना, सामाजिक यथार्थवाद और सांस्कृतिक अध्ययन के दृष्टिकोण से रचनाओं का विश्लेषण किया गया है।

3. साहित्यिक परिचय और रचना संसार

3.1 उपन्यास साहित्य

नासिरा शर्मा के उपन्यास समकालीन हिंदी साहित्य में अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं। उनका पहला उपन्यास 'शाल्मली' (1987) भारतीय महिलाओं की पीड़ा और संघर्ष का मार्मिक चित्रण है। यह उपन्यास विवाह संस्था, स्त्री-पुरुष संबंध और परिवार में स्त्री की स्थिति पर गहरे प्रश्न उठाता है। कथानायिका की यात्रा पारंपरिकता से आधुनिकता की ओर एक सार्थक विकास को दर्शाती है। इस उपन्यास में नासिरा शर्मा ने मुस्लिम परिवेश में पली-बढ़ी स्त्री के मनोविज्ञान को अत्यंत प्रभावी ढंग से चित्रित किया है।

'ठीकरे की मंगनी' (1989) उनका दूसरा महत्वपूर्ण उपन्यास है जो विभाजन की त्रासदी और मुस्लिम समाज की विडंबनाओं को उजागर करता है। यह उपन्यास उन परिवारों की कहानी है जिन्हें विभाजन के समय अपनी जड़ों से उखड़ना पड़ा। नासिरा शर्मा ने इसमें सांप्रदायिक हिंसा, विस्थापन की पीड़ा और नई पहचान की तलाश को बहुत संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया है। उपन्यास की भाषा और शिल्प इसे और भी प्रभावशाली बनाते हैं।

'जिंदा मुहावरे' (2004) नासिरा शर्मा का सबसे चर्चित और बहुप्रशंसित उपन्यास है। यह उपन्यास ईरान की इस्लामी क्रांति और उसके बाद के सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तनों का जीवंत दस्तावेज है। नासिरा शर्मा ने ईरान में अपने प्रवास के अनुभवों को इस उपन्यास का

आधार बनाया है। उपन्यास में धार्मिक कट्टरता, स्त्री दमन, युद्ध की विभीषिका और मानवीय संवेदनाओं का मार्मिक चित्रण है। यह उपन्यास न केवल ईरान की क्रांति का विवरण है, बल्कि सार्वभौमिक मानवीय प्रश्नों को भी संबोधित करता है।

'अक्षयवट' (2006) उपन्यास में नासिरा शर्मा ने वैवाहिक संबंधों की जटिलताओं और स्त्री की आर्थिक आत्मनिर्भरता के महत्व को रेखांकित किया है। यह उपन्यास आधुनिक शिक्षित स्त्री के संघर्ष और उसकी आकांक्षाओं का चित्रण है। 'पारिजात' (2012) में उन्होंने फिर से स्त्री जीवन के विविध आयामों को उजागर किया है। इन उपन्यासों में नासिरा शर्मा की परिपक्व दृष्टि और गहन जीवन अनुभव प्रतिबिंबित होते हैं।

3.2 कहानी साहित्य

नासिरा शर्मा की कहानियाँ समकालीन हिंदी कथा साहित्य में विशिष्ट स्थान रखती हैं। उनका पहला कहानी संग्रह 'पत्थर गली' (1986) प्रकाशित हुआ। इसके बाद 'संगसार', 'खुदा की वापसी', 'बुतखाना', 'दूसरा ताजमहल', 'इब्ने मरियम' आदि कई महत्वपूर्ण कहानी संग्रह प्रकाशित हुए। उनकी कहानियों में मुस्लिम समाज की स्त्रियों की दुर्दशा, धार्मिक कट्टरता, सामाजिक विद्रूपताएँ और मानवीय संवेदनाओं का सजीव चित्रण मिलता है।

'संगसार' कहानी संग्रह की शीर्षक कहानी अत्यंत मार्मिक है। यह कहानी ईरान में पत्थर मार कर सजा देने की क्रूर परंपरा पर आधारित है। इस कहानी में नासिरा शर्मा ने स्त्री के प्रति होने वाले अमानवीय व्यवहार और धार्मिक कट्टरता का कठोर आलोचना की है। 'बुतखाना' कहानी में वे धार्मिक पाखंड और अंधविश्वास पर प्रहार करती हैं। 'दूसरा ताजमहल' कहानी में स्त्री-पुरुष संबंधों की नई व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

नासिरा शर्मा की कहानियों की विशेषता यह है कि वे केवल मुस्लिम समाज तक सीमित नहीं हैं, बल्कि सार्वभौमिक मानवीय समस्याओं को संबोधित करती हैं। उनकी कहानियों में स्त्री विमर्श, धर्मनिरपेक्षता, सामाजिक न्याय और मानवाधिकारों के प्रति गहरी चिंता दिखाई देती है। उनकी भाषा सरल, सहज और प्रवाहमय है जो पाठक को कहानी से जोड़े रखती है।

3.3 यात्रा वृत्तांत और अन्य विधाएँ

नासिरा शर्मा के यात्रा वृत्तांत भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। उनका यात्रा वृत्तांत 'शब्दों के आलोक में' विशेष उल्लेखनीय है। उन्होंने अफगानिस्तान, ईरान, इराक आदि देशों की यात्राओं के अनुभवों को अपने वृत्तांतों में दर्ज किया है। ये वृत्तांत केवल यात्रा विवरण नहीं हैं, बल्कि उन देशों की सामाजिक-सांस्कृतिक-राजनीतिक स्थितियों का गहन अध्ययन भी हैं। नासिरा शर्मा ने इन यात्रा वृत्तांतों में स्थानीय लोगों के जीवन, उनकी समस्याओं और आकांक्षाओं को संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया है।

इसके अतिरिक्त उन्होंने संस्मरण, रिपोर्ताज और निबंध भी लिखे हैं। उनकी डायरी 'समय की शिलाएँ' उनके व्यक्तित्व और रचना-प्रक्रिया को समझने में सहायक है। नासिरा शर्मा ने फ़ारसी और अरबी साहित्य के अनुवाद कार्य भी किए हैं, जो भारतीय-अरबी साहित्यिक संवाद को मजबूत करते हैं।

4. प्रमुख विषय और सरोकार

4.1 स्त्री विमर्श

नासिरा शर्मा के साहित्य का केंद्रीय विषय स्त्री जीवन और स्त्री समस्याएँ हैं। वे मुस्लिम समाज में स्त्री की स्थिति का यथार्थ चित्रण करती हैं। तलाक, बहुविवाह, पर्दा प्रथा, मेहर, हलाला जैसी सामाजिक-धार्मिक प्रथाओं का उन्होंने निर्भीक चित्रण किया है। उनकी स्त्री पात्र केवल पीड़ित नहीं हैं, बल्कि संघर्षशील और विद्रोही भी हैं। वे अपने अधिकारों के प्रति सजग हैं और रूढ़ियों को तोड़ने का साहस रखती हैं।

नासिरा शर्मा का स्त्री विमर्श केवल मुस्लिम स्त्रियों तक सीमित नहीं है। वे सभी धर्मों और समाजों में स्त्री पर होने वाले अत्याचारों का विरोध करती हैं। उनकी रचनाओं में स्त्री शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता, निर्णय लेने का अधिकार और व्यक्तित्व विकास पर विशेष बल दिया गया है। वे मानती हैं कि स्त्री की मुक्ति केवल पुरुष वर्चस्व से मुक्ति नहीं, बल्कि उन सामाजिक-धार्मिक मान्यताओं से भी मुक्ति है जो स्त्री को दोयम दर्जे पर रखती हैं।

4.2 धार्मिक कट्टरता और सांप्रदायिकता

नासिरा शर्मा अपने साहित्य में धार्मिक कट्टरता और सांप्रदायिकता का कड़ा विरोध करती हैं। वे दिखाती हैं कि कैसे धर्म के नाम पर मानवता का गला घोंटा जाता है। 'जिंदा मुहावरे' में ईरान की इस्लामी क्रांति के बाद धार्मिक कट्टरता कैसे बढ़ी, इसका विस्तृत वर्णन है। 'संगसार' कहानी में धार्मिक न्याय के नाम पर होने वाली क्रूरता का मार्मिक चित्रण है। वे धर्म को मानवता के ऊपर नहीं मानतीं और धार्मिक रूढ़ियों का कड़ा विरोध करती हैं।

सांप्रदायिकता के प्रति भी उनका दृष्टिकोण अत्यंत स्पष्ट है। 'ठीकरे की मंगनी' में विभाजन की त्रासदी और सांप्रदायिक हिंसा का विवरण पाठक को झकझोर देता है। वे सांप्रदायिक सद्भाव के पक्षधर हैं और अपनी रचनाओं में हिंदू-मुस्लिम एकता का संदेश देती हैं। उनका मानना है कि धर्म व्यक्तिगत आस्था का विषय है और इसे राजनीति या सामाजिक विभाजन का आधार नहीं बनाना चाहिए।

4.3 सामाजिक यथार्थ और मानवीय संवेदना

नासिरा शर्मा का साहित्य सामाजिक यथार्थवाद का उत्कृष्ट उदाहरण है। वे समाज की वास्तविकताओं को बिना किसी आवरण के प्रस्तुत करती हैं। गरीबी, बेरोजगारी, शोषण, अन्याय और सामाजिक असमानता जैसे विषय उनके साहित्य में प्रमुखता से आते हैं। लेकिन उनकी रचनाएँ केवल समस्याओं का चित्रण नहीं करतीं, बल्कि समाधान की दिशा भी सुझाती हैं। वे शिक्षा, जागरूकता और सामाजिक सुधारों को परिवर्तन का माध्यम मानती हैं।

मानवीय संवेदना नासिरा शर्मा के साहित्य की आत्मा है। उनके पात्र जीवंत और विश्वसनीय हैं। वे पात्रों के मनोविज्ञान को बारीकी से समझती और चित्रित करती हैं। उनकी रचनाओं में प्रेम, करुणा, सहानुभूति और मानवीय गरिमा के प्रति गहरा सम्मान दिखाई देता है। वे मानती हैं कि साहित्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज को दिशा देना और मानवीय मूल्यों की स्थापना करना भी है।

4.4 भारतीय-अरबी सांस्कृतिक संवाद

नासिरा शर्मा की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि भारतीय और अरबी संस्कृतियों के बीच सेतु बनाना है। उन्होंने अरब देशों की यात्राएं कीं और वहाँ के समाज, संस्कृति और साहित्य का गहन अध्ययन किया। अरबी और फ़ारसी भाषाओं पर उनकी पकड़ ने उन्हें इन संस्कृतियों को भारतीय पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने में सक्षम बनाया। 'जिंदा मुहावरे' जैसे उपन्यास और विभिन्न यात्रा वृत्तांत भारतीयों को अरब संस्कृति से परिचित कराते हैं।

उनके साहित्य में अरबी साहित्य, संस्कृति और इतिहास के संदर्भ प्रचुरता से मिलते हैं। वे अरबी शब्दों, मुहावरों और कहावतों का सहज प्रयोग करती हैं जो उनके साहित्य को विशिष्ट बनाता है। साथ ही, वे भारतीय और अरबी संस्कृतियों के बीच समानताओं और अंतरों को भी उजागर करती हैं। उनका साहित्य सांस्कृतिक समझ और सहिष्णुता को बढ़ावा देता है।

5. साहित्यिक शिल्प और भाषा

5.1 कथा शिल्प और संरचना

नासिरा शर्मा की कथा शिल्प में परंपरा और प्रयोग का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। वे रैखिक और गैर-रैखिक दोनों प्रकार की कथा संरचना का प्रयोग करती हैं। उनके उपन्यासों में फ्लैशबैक तकनीक का सशक्त उपयोग मिलता है जो कथा को गहराई और विश्वसनीयता प्रदान करता है। 'जिंदा मुहावरे' में पत्र-शैली और डायरी शैली का प्रयोग कथा को और अधिक प्रामाणिक बनाता है।

उनकी कथाएँ घटना प्रधान कम और चरित्र प्रधान अधिक हैं। वे पात्रों के आंतरिक संघर्ष और मनोविज्ञान को चित्रित करने में अधिक रुचि रखती हैं। कथानक की गति संतुलित है - न बहुत तीव्र, न बहुत धीमी। वे प्रतीक और बिंब का भी सुंदर प्रयोग करती हैं जो उनके साहित्य को काव्यात्मक गुण प्रदान करता है। उनकी कहानियों में समापन अक्सर खुला होता है जो पाठक को सोचने के लिए प्रेरित करता है।

5.2 भाषा और शैली

नासिरा शर्मा की भाषा सरल, सहज और प्रवाहमय है। वे उर्दू-हिंदी के मिश्रित रूप का प्रयोग करती हैं जो स्वाभाविक और संप्रेषणीय है। उनकी भाषा में अरबी-फ़ारसी शब्दों का प्रयोग उनके साहित्य को विशिष्ट पहचान देता है। लेकिन यह प्रयोग इतना सहज है कि पाठक को भाषाई कठिनाई का अनुभव नहीं होता। वे मुहावरों और लोकोक्तियों का भी प्रभावी उपयोग करती हैं।

उनकी शैली वर्णनात्मक और संवादात्मक दोनों है। वे दृश्यों का इतना सजीव वर्णन करती हैं कि पाठक स्वयं को उस परिवेश में महसूस करने लगता है। उनके संवाद छोटे, स्वाभाविक और चरित्रानुकूल हैं। वे मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद की शैली में लिखती हैं जहाँ पात्रों के मन की गहराइयों को उजागर किया जाता है। व्यंग्य और विडंबना का भी वे सशक्त प्रयोग करती हैं।

5.3 पात्र चित्रण

नासिरा शर्मा के पात्र जीवंत, विश्वसनीय और बहुआयामी हैं। वे रूढ़िबद्ध चरित्रों की रचना नहीं करतीं। उनके स्त्री पात्र विशेष रूप से सशक्त और यादगार हैं। ये पात्र केवल पीड़ित नहीं हैं, बल्कि संघर्षशील, विचारशील और निर्णय लेने वाली हैं। नासिरा शर्मा पात्रों को काला या सफेद रंग में नहीं चित्रित करतीं, बल्कि उनकी जटिलताओं को स्वीकार करती हैं। उनके पात्रों में गुण और अवगुण दोनों हैं जो उन्हें मानवीय और विश्वसनीय बनाते हैं।

पुरुष पात्र भी वे संवेदनशीलता से चित्रित करती हैं। उनके पुरुष पात्र केवल खलनायक नहीं हैं। वे भी सामाजिक दबावों और परंपराओं के शिकार हैं। नासिरा शर्मा पात्रों के मनोविज्ञान को गहराई से समझती और प्रस्तुत करती हैं। उनके द्वारा रचित पात्र पाठक के मन में लंबे समय तक रहते हैं।

6. साहित्यिक योगदान और सम्मान

नासिरा शर्मा को उनके साहित्यिक योगदान के लिए अनेक सम्मानों से सम्मानित किया गया है। उन्हें भारत सरकार के साहित्य अकादमी पुरस्कार, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान पुरस्कार, कथा पुरस्कार और अन्य कई महत्वपूर्ण पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। उनकी

रचनाओं का विभिन्न भारतीय और विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुआ है। उनके साहित्य पर अनेक शोध कार्य हुए हैं और विश्वविद्यालयों में पाठ्यक्रमों में उनकी रचनाएँ शामिल हैं।

समकालीन हिंदी साहित्य में नासिरा शर्मा का योगदान बहुआयामी है। उन्होंने न केवल उत्कृष्ट साहित्य की रचना की, बल्कि हिंदी साहित्य में मुस्लिम जीवन और संस्कृति को एक नई दृष्टि से प्रस्तुत किया। उन्होंने स्त्री विमर्श को एक नई दिशा दी और सांप्रदायिक सद्भाव का संदेश दिया। उनका साहित्य भारतीय और अरबी संस्कृतियों के बीच सेतु का काम करता है। वे अपनी रचनाओं के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन की वकालत करती हैं।

7. निष्कर्ष

नासिरा शर्मा समकालीन हिंदी साहित्य की एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। उनका साहित्य यथार्थवाद, मानवीय संवेदना और सामाजिक प्रतिबद्धता का उत्कृष्ट उदाहरण है। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से मुस्लिम समाज, विशेषकर मुस्लिम स्त्रियों की स्थिति का प्रामाणिक चित्रण किया है। उनका साहित्य धार्मिक कट्टरता, सांप्रदायिकता और सामाजिक रूढ़ियों का विरोध करता है और मानवीय मूल्यों, समानता और न्याय का पक्षधर है।

नासिरा शर्मा की रचनाएँ केवल साहित्यिक महत्व की नहीं हैं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दस्तावेज भी हैं। वे भारतीय और अरबी संस्कृतियों के बीच सांस्कृतिक संवाद को बढ़ावा देती हैं और सांप्रदायिक सौहार्द्र का संदेश देती हैं। उनकी भाषा, शिल्प और पात्र चित्रण अत्यंत प्रभावशाली हैं। उनके द्वारा रचित पात्र, विशेषकर स्त्री पात्र, हिंदी साहित्य में अमर हो गए हैं।

नासिरा शर्मा का स्त्री विमर्श उनके साहित्य का सबसे सशक्त पक्ष है। वे स्त्री को केवल पीड़ित के रूप में नहीं, बल्कि एक संघर्षशील, सजग और निर्णय लेने वाली इकाई के रूप में चित्रित करती हैं। उनकी स्त्री पात्र रूढ़ियों को तोड़ती हैं और अपनी पहचान स्थापित करती हैं। यह दृष्टि समकालीन स्त्री विमर्श में महत्वपूर्ण योगदान है।

समकालीन हिंदी साहित्य में नासिरा शर्मा का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण और अद्वितीय है। वे एक ऐसी लेखिका हैं जिन्होंने हिंदी साहित्य को नई दिशा और नई दृष्टि दी है। उनका साहित्य न केवल आज बल्कि भविष्य में भी प्रासंगिक रहेगा। उनकी रचनाएँ पाठकों को सोचने, प्रश्न करने और परिवर्तन के लिए प्रेरित करती हैं। नासिरा शर्मा का साहित्य मानवीय गरिमा, स्वतंत्रता और समानता का पक्षधर है - ये वे मूल्य हैं जो किसी भी समय और समाज के लिए आवश्यक हैं।

संदर्भ ग्रंथ

- शर्मा, नासिरा. (1987). शाल्मली. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
- शर्मा, नासिरा. (1989). ठीकरे की मंगनी. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
- शर्मा, नासिरा. (2004). जिंदा मुहावरे. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
- शर्मा, नासिरा. (2006). अक्षयवट. नई दिल्ली: किताबघर प्रकाशन.
- शर्मा, नासिरा. (1992). संगसार (कहानी संग्रह). नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन.
- शर्मा, नासिरा. (1998). बुतखाना (कहानी संग्रह). नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन.
- सिंह, नामवर. (2007). 'नासिरा शर्मा का कथा संसार'. आलोचना. अंक 45, पृ. 23-35.
- त्रिपाठी, विश्वनाथ. (2010). समकालीन हिंदी कथा साहित्य में नासिरा शर्मा. नई दिल्ली: अनामिका प्रकाशन.
- कुमार, राजेश. (2012). 'नासिरा शर्मा के साहित्य में स्त्री विमर्श'. समकालीन भारतीय साहित्य. खंड 32, पृ. 67-78.
- पांडेय, मैनेजर. (2005). साहित्य और इतिहास दृष्टि. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन.
- मिश्र, सुधा. (2015). 'जिंदा मुहावरे: एक सांस्कृतिक विवेचन'. हंस. अंक 8, पृ. 45-52.
- वर्मा, प्रेमचंद. (2008). नासिरा शर्मा: व्यक्तित्व और कृतित्व. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन.
- चौधरी, इंदिरा. (2013). 'नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में सामाजिक यथार्थ'. कथादेश. अंक 156, पृ. 89-96.
- शुक्ला, रामचंद्र. (2009). हिंदी साहित्य का इतिहास (संशोधित संस्करण). इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन.
- जैन, निर्मला. (2016). समकालीन हिंदी साहित्य में मुस्लिम लेखिकाएँ. नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट.

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed /Refereed National Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-3, October-2023
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number October-2023/36
Impact Factor (IIJIF-1.561)
https://doi-ds.org/doilink/01.2023-11922556

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ० जुनैद अन्दलीब साजिद

for publication of research paper title

नासिरा शर्मा के साहित्य में सामाजिक सरोकार और स्त्री विमर्श

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-02, Issue-03, Month October, Year-2023.

Dr. Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com

INDEXED BY